दिनांक 13-09-1974 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

ज्ञान सागर शिव ही निर्बल को बलवान बनाते
हर आत्मा के संस्कार स्वभाव को श्रेष्ठ बनाते

ज्ञान की नई नई बातें अपने बच्चों को बताते
अपने मीठे मुरब्बी बच्चों की पहचान बताते

वही मुरब्बी हैं जो बाप के साथ कदम बढ़ाते
हर सेवा में स्वतः ही खुद को सहयोगी बनाते

अपनी स्टेज को वे योगयुक्त युक्तियुक्त बनाते
वरदान स्वरूप में स्नेह का रिटर्न बाप से पाते

बाप के गुण अपने स्वरूप से जब दिखाओगे
इसी विशेषता से सच्चे सेवाधारी कहलाओगे

सर्वशक्तियों का स्टॉक खुद के अन्दर बढ़ाओ
इसी विधि से प्रकृति को अपनी दासी बनाओ

सर्वगुण और सोलह कलाओं को अपनाओ
मर्यादाएं धारण कर मुरब्बी बच्चा कहलाओ